KAAV INTERNATIONAL JOURNAL OF ARTS, HUMANITIES & SOCIAL SCIENCES
A REFEREED BLIND PEER REVIEW QUARTERLY JOURNAL
KIJAHS/ JAN-MAR (2018)/VOL-5/ISS-1/A1 PAGE NO. 1-4
ISSN: 2348- 4349 IMPACT FACTOR (2017) – 7.9183
WWW.KAAVPUBLICATIONS.ORG

हाथरस के विविध धातु शिल्पों की तकनीक

[1]डॉ. वन्दना सिंह

189, रघुकला सदन, कस्तूरबा नगर, जैन नगर (खेड़ा), फिरोजाबाद–283203

सारांश

जहाँ एक ओर कलाकार की कृति सौन्दर्य की उद्‌बोधिका मानी जाती है, वहीं उसके स्थायित्व का अपना एक अलग महत्व है। कृति की श्रेष्ठता उसकी तकनीक एवं कार्य–प्रणाली (शैली) पर ही निर्भर करती है। कलाकार के लिये भाव पक्ष के साथ–साथ कला पक्ष का भी ज्ञान अत्यन्त आवश्यक है। भारत में ओडेशा (उड़ीसा) तथा पश्चिम बंगाल की खानों में पाई जाने वाली प्राकृतिक फायर क्ले (Natural Fire Clay) में साधारणतः 18–20% के लगभग एल्युमिना (Alumina) तथा शेष अन्य पदार्थ होते हैं। प्राकृतिक फायर क्ले में गणना के अनुसार शुद्ध एल्युमिना मिलाकर 35–40% उच्च एल्युमिना फायर क्ले बना लेते हैं, जो पॉट भट्‌टी को निर्मित करने में प्रयोग की जाती ळें हाथरस नगर के पास के क्षेत्र में धातुओं की चमक बढ़ाने वाली एक विशेष प्रकार की खनिज मिट्‌टी (पीला रेता) पायी जाती है, जिसका उपयोग हस्त धातु–शिल्प उद्योग में पात्रों की ढलाई हेतु सांचे बनाने में प्रयोग किया जाता है। यहाँ के शिल्पी चाँदी, पीतल व मिश्रित धातु से बने उपकरणों/पात्रों के मॉडलों पर उपयुक्त औजारों से उन पर बनाई गई सुन्दर व आकर्षक डिजायनों पर खुदाई द्वारा नक्काशी (Engraving) करके उन्हें अलंकृत करते हैं। पीतल में नक्काशी के अतिरिक्त पात्रों पर गिलट (जर्मन सिल्वर) अथवा काँच से बनी सुन्दर व आकर्षक कलाकृतियों को जड़कर या पेस्ट करके पच्चीकारी (Embedding) द्वारा भी उन्हें अलंकृत करते हैं। अन्त में बफिंग मशीन द्वारा पॉलिश करके उपकरणों/पात्रों को और भी अधिक आकर्षक व मनभावन बना देते हैं।

Copyright © 2017 Published by kaav publications. All rights reserved www.kaavpublications.org